विजयवर्गीय नवयुवक मंडल, कोटा द्वारा आयोजित संत रामचरण जी के 300वीं जयंती के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष के उपयोग हेतु भाषण

---

23 फरवरी, 2020

कोटा

जीवन मे हमें बहुत कम अवसर मिलते हैं जहाँ हम ऐसे लोगों से मिलते है जिनका प्रभाव हमारे जीवन में एक सकारात्मक चेतना का संचार करता है। आज मेरे लिए ऐसा ही एक पावन दिन है।

प्रसिद्ध संत, श्री रामचरण जी की 300वीं जयंती समारोह के शुभ अवसर पर आज यहाँ आप सबके बीच आ कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम मैं उनको शत-शत नमन करता हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि इस पावन अवसर पर पीठाधीश्वर जगतगुरु आचार्य श्री 1008 स्वामी श्री रामदयाल जी महाराज का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ है। स्वामीजी को मेरा सादर नमन। आज जब मैं इस प्रोग्राम में आ रहा था, मन ही मन मैं परमपूज्य संत श्री रामचरण जी की शिक्षाओं और उनके उपदेशों पर चिंतन-मनन कर रहा था। मेरा मानना है कि हम सबको उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए।

नि:स्वार्थ भावना से की हुई सेवा आपको लोगों से जोड़ती है। संत श्री रामचरण जी नि:स्वार्थ भक्ति और समर्पण को चरितार्थ करने वाले एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपने पूरे जीवन में ज्ञान, समर्पण तथा अनासक्ति पर जोर दिया था। वे हमें सीख दे गए कि मानवता की भावना और नि:स्वार्थ सेवा की भावना ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है।

उनका ये भी मानना था कि हर प्राणी में समान रूप से ईश्वर बसे हुए हैं। ईश्वर हर प्राणी के भीतर हैं। इसका अर्थ यह है कि हमें हर प्राणी के प्रति दया भाव रखना चाहिए। अहिंसा का जो पाठ स्वामीजी ने पढ़ाया है, सिखाया है, वो मानवता है। उन्हें हर युग में याद किया जाता रहेगा।

उनकी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए राम स्नेही सम्प्रदाय की स्थापना की गयी थी। राम स्नेही सम्प्रदाय ने उत्तर भारत में व्यक्ति संबंधी विचारधारा का प्रचार किया, जिसमे व्यर्थ के आडम्बर को खंडन कर राम भक्ति पर विशेष जोर दिया गया। राम स्नेही सम्प्रदाय ने सभी लोगों को बिना जाति, धर्म व लिंग भेद के राम भक्ति सिखायी। श्रद्धेय संत रामचरण जी का ये मानना था कि राम के नाम से ही ईश्वर की प्राप्ति होगी।

संत श्रीरामचरण जी का जीवनकाल वर्ष 1720 से 1799 तक रहा है। इनका जन्म राजस्थान के टोंक जिले में सदहा नाम के गांव में श्री बख्तराम विजयवर्गीय और श्रीमती देवहूती देवी के घर हुआ। राजस्थान की पुण्य प्रसूता भूमि ने जहां एक तरफ पराक्रमी राजाओं और योद्धाओं को जन्म दिया है, वही महान संतों और भक्तों की भी ये भूमि रही है।

संत श्रीरामचरण जी के बचपन का नाम रामकिशन था। उस समय के जयपुर के राजा जयसिंह द्वितीय ने उनको जयपुर में दीवान बना दिया। सन् 1743 में अपने पिता के देहांत के बाद इनका मन सांसारिक पहलुओं से हट गया। इनके सन्यस्त हो जाने का भी एक रोचक विवरण है। एक रात इन्हें एक स्वप्न आया। इस स्वप्न में जो संत आए, उनसे इतने प्रभावित हुए कि उनकी खोज में घर-गृहस्थी को त्यागकर और परिवार से अनुमति लेकर ये धर्ममार्ग की

ओर अग्रसर हुए। इन्होंने "रामस्नेही सम्प्रदाय" नाम से एक धार्मिक परम्परा की शुरूआत की। ये निर्गुण भक्ति के उपासक थे।

स्वामी जी ने भीलवाड़ा में दंतरा गांव में 1817 में तपस्या शुरू की और 9 वर्ष तक तपस्या की। उन्होंने रामधुन को लोगों तक पहुंचाया और इसका महत्व समझाया। विशिष्टाद्वैत के सिद्धांतों को अपनाया। वे मानते थे कि हमें उस अलौकिक शक्ति से वास्तव में स्नेह होना चाहिए। उनका कहना था कि उसकी नजरों में राजा और रंक सभी बराबर है और जात-पात का भेद मिटाकर समाज को सुधारा जा सकता है।

संत श्री रामचरण जी का मानना था कि भटकने से ईश्वर नहीं मिलता। हर जीव के अंदर भी ईश्वर है और उसी को हमें समझना होगा। उनका मानना था कि पूजा के सभी तरीके और ईश्वर उपासना के सभी मार्ग मनुष्य को सर्वव्यापी परमात्मा तक ले जाते हैं। इसी विश्वास के आधार पर वे सगुण एवं निर्गुण भक्ति पद्धतियों के बीच के संघर्ष को समाप्त करने का निरन्तर प्रयास करते रहे। उन्होंने अपने शिष्यों को मोटे-मोटे ग्रंथों को पढ़ने और जटिल तथा लम्बे कर्मकांड करने की बजाय सरल उपायों के माध्यम से ईश्वर की उपासना करने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, उन्होंने सभी प्रकार की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया, किंतु अपनी विशिष्ट निर्गुण भक्ति पद्धति के लिए वे अत्यंत लोकप्रिय हुए।

संत श्री रामचरण जी ने समाज से अंधविश्वासों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किए। उन्होंने सदैव जाति, संप्रदाय और धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठायी। वे समाज के कमजोर वर्गों के उद्धार के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। उन महान् और श्रद्धेय संत ने अज्ञान के अंधेरे को दूर करके शिक्षा एवं ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए जो निरंतर प्रयास किया, उससे लाखों लोगों को प्रेरणा मिली है।

मुझे खुशी है कि स्वामी जी के प्रवचनों की श्रृंखला का 'वाणी जी' नामक पुस्तक में संग्रह किया गया है। पुस्तक दर्शन और इतिहास की विरासत होती हैं। जहाँ तक मुझे जानकारी है, इसमें 36,250 रचनाएं हैं। इसका प्रकाशन उनके शिष्य नवलराम जी ने किया था। इनके प्रवचनों का दूसरा संकलन "अनुभव वाणी" नाम से भी है। इनके संकलनों के नए-नए संग्रह छपते रहते हैं। वर्ष 2005 में नवीनतम संकलन छपा था।

अध्यात्मवाद के क्षेत्र में भी विजयवर्गीय समाज को 'रामस्नेही संप्रदाय' का आशीर्वाद प्राप्त है। श्री रामचरण जी महाराज के संरक्षण और प्रेरणा के तहत, विजयवर्गीय समाज ने सामाजिक संरचना के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और साथ ही साथ धार्मिक क्षेत्र में विभिन्न यादगार काम किए हैं। पुष्कर में गिरधर गोपाल का प्रसिद्ध मंदिर, जिसने मीराबाई को अमर बना दिया है, इस समाज की एक धरोहर है।

यह बड़े हर्ष का विषय है कि विजयवर्गीय वैश्य मंडल संत श्रीरामचरण जी की 300वीं जयंती मना रहा है और समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए उनकी शिक्षाओं तथा विरासत को आगे बढ़ा रहा है। इस संदर्भ में, मैं विजयवर्गीय समाज का अभिनंदन करता हूं।

यह समाज एक प्रसिद्ध व्यापारी समुदाय है और राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। देश में और विदेशों में व्यापार और वाणिज्य की दृष्टि से विजयवर्गीय समाज का हमेशा एक विशिष्ट स्थान रहा है। अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में विजयवर्गीय समुदाय की भूमिका निश्चित रूप से सराहनीय है।

विजयवर्गीय समाज सदा से ही अपनी मेहनत, व्यवहार व ईमानदारी के बूते विजय प्राप्त करता रहा है ओर ये विजय का प्रतीक बन गया है। यह समाज कुरीतियों का त्याग कर लगातार आगे बढता जा रहा है। आने वाले समय में विजयवर्गीय समाज नई इबारत लिखेगा।

हम मानते हैं और ये सत्य भी है कि व्यापारी समुदाय भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ रहा है। राजकोष में प्राप्त होनेवाले अप्रत्यक्ष करों का बड़ा हिस्सा व्यापारियों से ही लिया जाता है। व्यापार और इससे जुड़ी गतिविधियाँ बेरोजगारी तथा गरीबी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मैं आप सभी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि आप वर्षों से इस बड़ी जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन करते आये हैं। साथ ही, मैं यह भी आशा करता हूं कि आप राष्ट्र के निर्माण और देश की प्रगति में आगे भी इसी प्रकार से अपना योगदान देते रहेंगे।

मेरा ऐसा मानना है कि इस समाज को अपने समाज के साथ-साथ दूसरे समाज के असहाय लोगों की भी मदद करनी चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री जी के शासन प्रणाली का भी यही मंत्र है-सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास।

इसके साथ-साथ मैं समझता हूँ कि विजयवर्गीय नवयुवक मंडल जैसे संगठनों को मजबूत करके उन्हें ऐसे संस्थाओं में परिवर्तित किया जाना चाहिए जो समुदाय के सदस्यों के माध्यम से विचारों व श्रेष्ठ प्रयासों को साझा करने एवं आपसी समन्वय बढ़ाने में अत्यन्त सहायक होंगे।

ऐसी संस्थायें दूसरों के यथार्थपरक अनुभवों से शिक्षा लेकर सुविचारित एवं बेहतर तरीके से व्यापार संबंधी निर्णय लेने में सहायक होंगी। मेरा मानना है कि संस्था में कार्य करनेवाले व्यापारी समुदायों के माध्यम से बेहतर आर्थिक वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। निःसंदेह ऐसा करना राष्ट्र के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। इससे न केवल व्यावसायिक गतिविधियों को निर्बाध ढंग से कार्यान्वित किया जा सकेगा, बल्कि ऐसे संगठनों को उनके सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति में भी सहायता मिलेगी।

मुझे खुशी है कि विजयवर्गीय नवयुवक मण्डल ने स्वामी जी की 300वीं जयंती का आयोजन किया है। हमारे देश में समय-समय पर महान संतों ने ही समाज को राह दिखाने का कार्य किया है और लोग उनसे प्रेरणा लेते रहे हैं।

साथियों, परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इस सत्य को ध्यान में रखते हुए हमें भी देश-दुनिया में हो रहे परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को ढालना चाहिए। मैंने विजयवर्गीय नवयुवक मंडल द्वारा किए जाने वाले प्रमुख कार्यों को देखा, तो मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप समाज के हित में कई कार्य करते रहते हैं। इन सभी कार्यों के प्रभावी परिणाम निकलते हैं जो समाज को प्रगतिशील बनाते हैं।

मुझे इस समारोह में आमंत्रित करने के लिए मैं एक बार पुनः आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। मैं विजयवर्गीय नवयुवक मंडल के सभी भावी प्रयासों में उनकी सफलता की कामना करता हूं और इतने भव्य तरीके से इस वार्षिक समारोह के आयोजन के लिए उनकी सराहना करता हूं।

अंत में, एक बार फिर परमपूज्य संत रामचरण जी का पुण्य स्मरण करते हुए आप सभी को मेरी ओर से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। नव वर्ष समस्त देशवासियों के लिए सुख-समृद्धिकारक, आनंदित करने वाला एवं फलदायी सिद्ध हो।